



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 10, October 2022

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462

6381 907 438

ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

संस्कृतिकरण की अवधारणा का आलोचनात्मक मूल्यांकन : राजस्थान के विशेष संदर्भ में

डॉ. मैनपाल

सहायक आचार्य, इतिहास, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सार

संस्कृतीकरण भारत में देखा जाने वाला विशेष तरह का सामाजिक परिवर्तन है। इसका मतलब है वह प्रक्रिया जिसमें जातिव्यवस्था में निचले पायदान पर स्थित जातियाँ ऊँचा उठने का प्रयास करती हैं। ऐसा करने के लिए वे उच्च या प्रभावी जातियों के रीति-रिवाज़ या प्रचलनों को अपनाती हैं। यह समाजशास्त्र की पासिंग नामक प्रक्रिया के जैसा ही है। इस शब्द के प्रयोग को भारतीय समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास ने १९५० के दशक में लोकप्रिय बनाया। हालाँकि इसके इससे पुराने उल्लेख भीमराव अंबेडकर कृत कास्ट्स इन् इन्डिया: देअर मेकैनिज़म, जेनेसिस एन्ड डेवलपमेन्ट में मिल सकते हैं। "सामाजिक सीढ़ी में ऊपर से नीचे की ओर अनुकरण के चलने" की इस प्रक्रिया के सबसे पुराने उल्लेख, एक अन्य सन्दर्भ में गैब्रियल टार्डे लिखित "द लॉज़ ऑफ़ इमिग्रेशन" में मिलते हैं। श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण की परिभाषा देते हुए कहा कि "इस प्रक्रिया में निचली या मध्यम हिन्दू जाति या जनजाति या कोई अन्य समूह, अपनी प्रथाओं, रीतियों और जीवनशैली को उच्च या प्रायः द्विज जातियों की दिशा में बदल लेते हैं। प्रायः ऐसे परिवर्तन के साथ ही वे जातिव्यवस्था में उस स्थिति से उच्चतर स्थिति के दावेदार भी बन जाते हैं, जो कि परम्परागत रूप से स्थानीय समुदाय उन्हें प्रदान करता आया हो....।" संस्कृतीकरण का एक स्पष्ट उदाहरण कथित "निम्न जातियों" के लोगों द्वारा द्विज जातियों के अनुकरण में शुद्ध शाकाहार को अपनाना है, जो कि परम्परागत रूप से अशाकाहारी भोजन के विरोधी नहीं होते। एम. एन. श्रीनिवास के अनुसार, संस्कृतीकरण केवल नयी प्रथाओं और आदतों का अंगीकार करना ही नहीं है, बल्कि संस्कृत वाङ्मय में विद्यमान नये विचारों और मूल्यों के साथ साक्षात्कार करना भी इसमें आ जाता है। वे कहते हैं कि कर्म, धर्म, पाप, माया, संसार, मोक्ष आदि ऐसे संस्कृत साहित्य में उपस्थित विचार हैं जो कि संस्कृतीकृत लोगों के बोलचाल में आम हो जाते हैं। यह परिघटना नेपाल में भी खास, मगर, नेवार, थारू लोगों में देखी गयी है।

परिचय

राजस्थान में मुश्किल से कोई महीना ऐसा जाता होगा, जिसमें धार्मिक उत्सव न हो। सबसे उल्लेखनीय व विशिष्ट उत्सव गणगौर है, जिसमें महादेव व पार्वती की मिट्टी की मूर्तियों की पूजा 15 दिन तक सभी जातियों की स्त्रियों के द्वारा की जाती है, और बाद में उन्हें जल में विसर्जित कर दिया जाता है। विसर्जन की शोभायात्रा में पुरोहित व अधिकारी भी शामिल होते हैं व बाजे-गाजे के साथ शोभायात्रा निकलती है। हिन्दू, सिख, जैन और बौद्ध एक-दूसरे के त्योहारों में शामिल होते हैं। इन अवसरों पर उत्साह व उल्लास का बोलबाला रहता है। एक अन्य प्रमुख उत्सव अजमेर के निकट पुष्कर में होता है, जो धार्मिक उत्सव व पशु मेले का मिश्रित स्वरूप है। यहाँ राज्य भर से किसान अपने ऊँट व गाय-भैंस आदि लेकर आते हैं, एवं तीर्थयात्री मुक्ति की खोज में आते हैं। अजमेर स्थित ब्रह्मा जी का मंदिर दुनिया का एक मात्र ब्रह्मा मंदिर है। यह विश्व का एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ पर कंबंधो(वे योद्धा जिनका धड़ सर कटने के बाद भी सैकड़ों किलोमीटर और सैकड़ों लोगों से या कई घंटों तक लड़ा हो) की पूजा होती है। [1] राजस्थान का विशिष्ट नृत्य घूमर है, जिसे उत्सवों के अवसर पर केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। [2] घेर नृत्य (महिलाओं और पुरुषों द्वारा किया जाने वाला, पनिहारी (महिलाओं का लालित्यपूर्ण नृत्य), व कच्ची घोड़ी (जिसमें पुरुष नर्तक बनावटी घोड़ी पर बैठे होते हैं) भी लोकप्रिय है। सबसे प्रसिद्ध गीत 'कुर्जा' है, जिसमें एक स्त्री की कहानी है, जो अपने पति को कुर्जा पक्षी के माध्यम से संदेश भेजना चाहती है व उसकी इस सेवा के बदले उसे बेशक्रीमती पुरस्कार का वायदा करती है। राजस्थान ने भारतीय कला में अपना योगदान दिया है और यहाँ साहित्यिक परम्परा मौजूद है। विशेषकर भाट कविता की। चंदबरदाई का काव्य पृथ्वीराज रासो या चंद रासा, विशेष उल्लेखनीय है, जिसकी प्रारम्भिक हस्तलिपि 12वीं शताब्दी की है। मनोरंजन का लोकप्रिय माध्यम ख्याल है, जो एक नृत्य-नाटिका है और जिसके काव्य की विषय-वस्तु उत्सव, इतिहास या प्रणय प्रसंगों पर आधारित रहती है। राजस्थान में प्राचीन दुर्लभ वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में हैं, [3,4] जिनमें बौद्ध शिलालेख, जैन मन्दिर, किले, शानदार रियासती महल और मंदिर शामिल हैं। राजस्थान मेलों और उत्सवों की धरती है। यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध है। सात वार नौ त्योहार। यहाँ के मेले और पर्व राज्य की संस्कृति के परिचायक हैं। यहाँ लगने वाले पशु मेले व्यक्ति और पशुओं के बीच की आपसी निर्भरता को दिखाते हैं। राज्य के बड़े मेलों में पुष्कर का कार्तिक मेला [3], परबतसर और नागौर के तेजाजी

का मेला को गिना जाता है। यहाँ तीज का पर्व सबसे बड़ा माना गया है श्रावण माह के इसी पर्व के साथ त्योहारों की श्रंखला आरम्भ होती है जो गणगौर तक चलती है। इस सम्बन्ध में कथन है कि तीज त्योहारा बावरी ले डूबी गणगौर, होली, दीपावली, विजयदशमी, नवरात्र जैसे प्रमुख राष्ट्रीय त्योहारों के अलावा अनेक देवी-देवताओं, संतो और लोकनायकों तथा नायिकाओं के जन्मदिन मनाए जाते हैं। यहाँ के महत्त्वपूर्ण मेले हैं तीज, गणगौर(जयपुर), जीण माता मेला (सीकर), बनेश्वर (डूंगरपुर) का जनजातीय कुंभ, श्री महावीर जी (सवाई माधोपुर मेला), रामदेवरा या रूपेचा(जैसलमेर), जंभेश्वर जी मेला(मुकाम-बीकानेर), कार्तिक पूर्णिमा और पशु-मेला (पुष्कर-अजमेर) और श्याम जी मेला (सीकर) आदि।[5,6]

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा तहसील में संगरिया के पास में धनोप माताजी का एक प्रसिद्ध मेला भरता है जो नवरात्रा में भरता है धनोप माता राजा धुंध की कुलदेवी थी और इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान के शासन काल के समय बताया जाता है प्राचीन काल में यह नगर राजा धुंध की नगरी की जिसे ताम्रवती नगरी के नाम से भी जाना जाता था

विचार-विमर्श

राजस्थान को फेस्टिवल टूरिज्म का प्रमुख केंद्र कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पुष्कर मेला देश के सबसे बड़े आकर्षणों में से है। हर साल लाखों श्रद्धालु पुष्कर आकर पवित्र झील में डूबकी लगाते हैं। यहां दुनिया का सबसे बड़ा ऊंटों का मेला भी लगता है जिसमें 50,000 ऊँट हिस्सा लेते हैं। जनवरी, 2010 में इस मेले ने बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया। इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में हर 12 साल पर कुंभ होता है जबकि हर छह साल में अर्द्धकुंभ का आयोजन हरिद्वार और प्रयाग में होता है। इनमें विदेशी पर्यटक भारी तादाद में आते हैं। राजस्थान की संस्कृति अनोखी और ऐतिहासिक अतीत के समान रंगीन है। राजस्थानी संस्कृति राज्य के रंगीन इतिहास को दर्शाती है। लोगो को अपनी लोक नृत्यों, पारंपरिक व्यंजनों, राजस्थान के लोगों और उनके रोजमर्रा के जीवन में संस्कृति का सार मिल सकता है। एक राजसी राज्य होने के नाते, राजस्थान अपने शाही भव्यता और रॉयल्टी के लिए जाना जाता है। [7,8] यह अपनी सुंदर परंपराओं, संस्कृति, लोगों, इतिहास और स्मारकों के साथ दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करती है।

राजस्थानी लोगों की पोशाक : राजस्थान के लोगों को रंगीन कपड़े, पगड़ी और साड़ियों जो पत्थरों और घुंगुओं से सुशोभित पहनना पसंद करते हैं। पुरुष 'जोधपुरी सफा' या 'जयपुरी पगड़ी' के रूप में जाने वाले पगड़ी पहनते हैं जो कि उनकी ड्रेसिंग का एक अभिन्न अंग है। अनग्रक्ष, कपास से बने एक फ्रॉक प्रकार परिधान ऊपरी शरीर को कवर करता है और निम्न शरीर धोती या पजामा के साथ लिपटा जाता है। राजस्थानी महिलाएं आभूषण के शौकीन हैं और वे अपने कपड़े को चंकी चांदी और लाख के गेहने के साथ पहनना पसंद करती हैं।[9,10]

राजस्थान में कला और शिल्प : अपनी उत्तम हस्तशिल्प वस्तुओं के साथ, राजस्थान, आभूषण, रंगीन कपड़े, कढ़ाई वाले कपड़े और चमड़े के उत्पादों को खरीदने का असाधारण स्थान है। आप लघु चित्रों, हाथों से बुने हुए गलीचा और कठपुतलियों को खरीद सकते हैं जो कि यहां अक्सर पर्यटकों द्वारा खरीदे जाते हैं। लकड़ी के डमी के साथ कठपुतली शो राजस्थान में भी प्रदर्शित किए जाते हैं जो कई पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। चूंकि राज्य अपने राजस्थानी वस्त्र, टाई डाई काम, कढ़ाई, ज़री, दर्पण का काम, धातु धागा कढ़ाई और हाथ ब्लॉक चित्रित कपड़े के लिए प्रसिद्ध है यहां काफी लोकप्रिय हैं।

राजस्थानी संगीत : राजस्थान के सुन्दर लोक संगीत कुछ ऐसा है की वह एक बेजान से रेगिस्तान में भी जान डाल देते है। इन गीतों को अलग अलग कहानी सुनाते हुए गाया जाता है। वे बहुत अच्छे और सम्मोहक हैं और आमतौर पर विशेष अवसरों और त्योहारों के दौरान गाया जाता है। राजस्थानी संगीत न केवल भारत में बल्कि पुरे विश्व में प्रसिद्ध है।

राजस्थानी नृत्य : राजस्थान में किसी भी समारोह में क्षेत्रीय कलाकारों के लोक नृत्य के प्रदर्शन के बिना अधूरा रहता है। पोशाक, अभिव्यक्ति, चाल और ताल उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। राजस्थान के कुछ लोकप्रिय नृत्य हैं, कालबेलिया नृत्य, एक प्राचीन नृत्य कलाबेलिया समुदाय की महिलाओं द्वारा अभ्यास किया जाता है। जबकि घूमर नृत्य राजपूत महिलाओं द्वारा किया जाता है।[11,12]

राजस्थानी खाना : राजस्थान अपने पारंपरिक व्यंजनों के लिए जाना जाता है। घी, मक्खन और भारतीय मसालों की एक सरणी के साथ बने, राजस्थानी खाना इतना स्वादिष्ट होता है की आप अपनी उँगलियाँ चाटते रह जायेंगे। दल-बाति-चूरमा, गेटे की सबजी, मिर्ची बडा, पज कछोरी, घवर, बीकानेरी भुजिया और दिल खुशल कुछ खास रोचक व्यंजन हैं जिन्हें आपको एक बार जरूर खाना चाहिए।

राजस्थान की संस्कृति पश्चिमी भारतीय रंगीन संस्कृति, लोक गीत और संतुलन के साथ नृत्य की घोषणा करती है।

राजस्थानी संस्कृति विरासत और जातीयता में समृद्ध है, जिसमें पूरे भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य शामिल हैं। शाही राजवंशों, जिन्होंने इस क्षेत्र पर शासन किया था, ने विभिन्न कला रूपों का संरक्षण किया। इन्हें जोड़ने के लिए, लोक समुदायों ने समान रूप से समृद्ध लोक सांस्कृतिक विपुलता के अपने खजाने के साथ राजस्थानी संस्कृति में योगदान दिया। संगीत में राजस्थानियों के सरल और सांसारिक कामों को दर्शाया गया है, जो भारतीय क्लासिक्स के उच्च मानकीकरण से जुड़ा हुआ है।[13,14]

परिणाम

त्यौहार राजस्थानी संस्कृति की समृद्धि को सुशोभित करते हैं, जिससे राजस्थानियों का जीवन रंग और उत्सव से भरा होता है। भारत के सभी प्रमुख त्योहारों जैसे दिवाली, होली, और जन्माष्टमी को बड़े उत्साह से मनाते हैं। रेगिस्तानी त्यौहार राजस्थानी संस्कृति के लिए विशिष्ट हैं और लोग उत्साह में आते हैं। हर साल यह सर्दियों के सर्द मौसम के दौरान मनाया जाता है। मेले का आयोजन भी अपनी मस्ती और मस्ती के साथ किया जाता है। सपेरो, कठपुतलियों, कलाबाजों और कलाकारों ने पर्यटकों और राजस्थानी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिससे रेगिस्तान क्षेत्र में खौफ और सुंदरता बढ़ गई। ऊंट भी त्यौहार का एक विशेष आकर्षण है। वास्तव में त्यौहार की थाली कुछ अद्भुत गेम ट्रिक्स है जो ऊंटों द्वारा किए जाते हैं जो कि राजस्थानियों का हिस्सा और पार्सल हैं। पशु को आकर्षित करने में अद्वितीय परिश्रम किया जाता है और उन्हें ऊंट की प्रशंसा करने के लिए असाधारण प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार किया जाता है। अन्य दिलचस्प प्रतियोगिताओं मूछें और पगड़ी बांधने की प्रतियोगिताएं हैं और लोग पूरे दिल से इन उत्सवों का आनंद लेते हैं। राजस्थानी धर्मगुरु, देवी पार्वती के सम्मान में, अपनी पसंद के पति की तलाश के लिए, अठारह दिन तक चलने वाले त्यौहार गणगौर को प्राप्त करते हैं। अगस्त के महीने में, एक लोक देवता गोगाजी की याद में अगस्त में राजस्थान के गोगामेड़ी में एक राजसी मेला आयोजित किया जाता है।

भारतीय संस्कृति का कोई भी अध्ययन इसके संगीत और नृत्य की कुछ झलक के बिना अधूरा रहेगा। राजस्थानी संस्कृति भी इस मामले में काफी लोकप्रिय है। लोक संस्कृति के संगीत की धुनें नृत्य और गीतों की परंपरा से पूरी तरह परिलक्षित होती हैं। लोक गीत आमतौर पर गाथागीत होते हैं, जो नायकों और प्रेम कथाओं के भव्य कामों से संबंधित होते हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक गीत, अर्थात्, भजन और बनियाँ भी प्रचलित हैं। वे आम तौर पर सारंगी, ढोलक, सितार, आदि जैसे वाद्ययंत्रों की संगत में विभिन्न हर्षोल्लास के साथ पेश किए जाते हैं। राजस्थान के भोपा समुदाय ने कथा गीत गाए और 'रावण-धाता' संगीत वाद्य की धुनों पर प्रहार किया। राजस्थानी संस्कृति ने अपने अनूठे नृत्य रूपों, जैसेलमेर के कालबेलिया नृत्य और उदयपुर से घूमर नृत्य के लिए दुनिया भर में ख्याति अर्जित की है। घूमर एक प्रथागत महिला राजस्थानी लोक नृत्य है, जिसमें महिला डांसर्स ने भंवर में भाग लिया, और पुरुष और महिला गायकों के साथ।[15,16]

पनिहारी एक अनूठी गायन शैली है जो राजस्थानी महिलाओं द्वारा प्रचलित है, जो कुओं से पानी लाती है। महिलाओं ने कुओं से पानी लाते समय गीत गाया। डांस भी पारंपरिक और 'देसी घरानों' का एक मिश्रण है। राजस्थानी संस्कृति रंगीन त्योहारों की भूमि है। भोजन में राजस्थानियों की परंपरा को शामिल किया गया है, जो पानी का कम उपयोग करते हैं और सब्जियों और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन का सेवन करते हैं। थार रेगिस्तान की भूमि लोगों को अद्वितीय आकर्षण प्रदान करती है और राजस्थानियों की जीवनशैली इस क्षेत्र की सादगी और भव्यता को सही ठहराती है।

राजस्थान योद्धाओं और रेगिस्तानी निवासियों का देश है और यह काफी हद तक राजस्थानी संस्कृति से मिलता जुलता है। भोजन, भी, इस प्रवृत्ति के लिए उन्मुख है। दाल, बाटी और चूरमा प्रधान भोजन है। लच्छेदार पराठा और बेसन की मिस्सी पूड़ी राजस्थान की रोटी की खासियत है। मटन से तैयार किए गए मांसाहारी पकवानों के लिए राजस्थान को पसंद था। खाना पकाने में धनिया, पुदीना जैसे मसालों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। चटनी भी राजस्थानी भोजन के अधिक स्वाद को बढ़ाती है।[17,18]

राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में स्थानीय लोगों के साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए जादू करने की अपनी अनोखी आभा है। जीवनशैली, स्वाभाविक रूप से, इस प्रभाव के तहत पर अंकुश लगाती है और इस तरह पूरे राजस्थानी संस्कृति पर बहुत बड़ा प्रभाव डालती है। थार की शांति के अलावा, अरावली की विदेशी श्रृंखला और राजपूतों और मुगल राजाओं की ऐतिहासिक विरासत, जो उनके स्मारकों, महलों और किलों के अवशेषों में पाए जाते हैं, विदेशों से भी, बहुत सारे पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। राजसी महलों को आराम और विलासिता प्रदान करने के प्रावधान के साथ हेरिटेज होटलों में बदल दिया गया है। राजस्थान, जाटों, भीलों और गुर्जरों की स्थानीय जनजातियों की उच्च आबादी के साथ खानों और वस्त्रों का खजाना है। उनके सुंदर हस्तशिल्प और कलाकृतियाँ राष्ट्र द्वारा अत्यधिक प्रशंसित हैं। राजस्थानी संस्कृति अपने सांस्कृतिक उत्साह में अद्वितीयता के साथ खड़ी है। संगीत, त्यौहार, व्यंजन और जीवनशैली ऐसे रत्न हैं जिन पर पूरा देश गर्व महसूस करता है।[19,20]



निष्कर्ष

राजस्थान, भारत के सबसे खूबसूरत राज्यों में से एक है। यहां की संस्कृति दुनिया भर में मशहूर है। राजस्थान की संस्कृति विभिन्न समुदायों और शासकों का योगदान है। आज भी जब कभी राजस्थान का नाम लिया जाए तो हमारी आंखों के आगे थार रेगिस्तान, ऊंट की सवारी, घूमर और कालबेलिया नृत्य और रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान आते हैं। अपने सभ्य स्वभाव और शालीन मेहमाननवाजी के लिए जाना जाता है ये राज्य। चाहे स्वदेशी हो या विदेशी, यहां की संस्कृति तो किसी का भी मन चुटकियों में मोह लेगी। [21]

संदर्भ

1. Verma, Cheenu (2018-12-12). "राजस्थान की संस्कृति है भारत की सबसे खूबसूरत संस्कृति, पढ़ें". <https://hindi.nativeplanet.com>. अभिगमन तिथि 2021-04-21.
2. ↑ "अतुल्य भारत | घूमर". www.incredibleindia.org. मूल से 21 अप्रैल 2021 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2021-04-21.
3. ↑ भाषा. "Pushkar Mela | कार्तिक पूर्णिमा : पुष्कर मेला संपन्न". hindi.webdunia.com. अभिगमन तिथि 2021-04-21.
4. "राजाओं की भूमि" | karigarofficial.com | 3 अगस्त 2022 को लिया गया ।
5. ^ स्कूपवूप (10 जून 2016) | Vegetarians-And-Which-State-Is-The-Least-Vegetarian/#.x4wtshb8z "इस सर्वे में पता चला कि कितने भारतीय मांसाहारी हैं और कौन सा राज्य सबसे कम शाकाहारी है" | [cite web](#)}: मूल्य की जाँच करें | [ur1=\(सहायता\)](#)
6. ^ "राजस्थान से निर्यात" (पीडीएफ) | एक्जिबैकइंडिया | 26 अगस्त 2022 को लिया गया ।
7. ^ "धार्मिक समुदाय द्वारा जनसंख्या" | भारत की सहमति | भारत सरकार | 16 फरवरी 2017 को लिया गया ।
8. PTI (1 September 2019). "Kalraj Mishra is new governor of Rajasthan, Arif Mohd Khan gets Kerala | India News - Times of India". The Times of India (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 1 September 2019.
9. ↑ "Rajasthan Profile" (PDF). Census of India. मूल से 16 September 2016 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 21 July 2016.
10. ↑ "MOSPI Net State Domestic Product, Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India". अभिगमन तिथि 7 April 2020.
11. ↑ "Report of the Commissioner for linguistic minorities: 52nd report (July 2014 to June 2015)" (PDF). Commissioner for Linguistic Minorities, Ministry of Minority Affairs, Government of India. पृष्ठ 34–35. मूल (PDF) से 28 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 फ़रवरी 2016.
12. ↑ "Sub-national HDI – Area Database – Global Data Lab". hdi.globaldatalab.org (अंग्रेज़ी में). मूल से 23 September 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 September 2018.
13. ↑ "Census 2011 (Final Data) – Demographic details, Literate Population (Total, Rural & Urban)" (PDF). planningcommission.gov.in. Planning Commission, Government of India. मूल से 27 January 2018 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 3 October 2018.
14. ↑ Jat, Madan; Jat (2018). Madan. Jat.
15. ↑ [rajasthan gk quiz http://www.rajasthangkquiz.com/mukundara-hills-national-park/](http://www.rajasthangkquiz.com/mukundara-hills-national-park/). गायब अथवा खाली ।
16. ↑ Kohli, Anju; Shah, Farida; Chowdhary, A. P. (1997). Sustainable Development in Tribal and Backward Areas (अंग्रेज़ी में). Indus Publishing. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7387-072-9.
17. ↑ इम्पीरियल गजैटियर
18. ↑ गोपीनाथ शर्मा / 'Social Life in Medieval Rajasthan' / पृष्ठ ३
19. ↑ <http://hindi.mapsofindia.com/rajasthan/jaipur/places-of-interest/> Archived 2016-09-19 at the Wayback Machine जयपुर के दर्शनीय स्थल
20. ↑ बेरोजगार सेवा केन्द्र सीकर
21. ↑ [rajasthan gk quiz http://www.rajasthangkquiz.com/mukundara-hills-national-park/](http://www.rajasthangkquiz.com/mukundara-hills-national-park/). गायब अथवा खाली ।



INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118



ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 **9940 572 462**  **6381 907 438**  **ijirset@gmail.com**



www.ijirset.com

Scan to save the contact details